International Journal of Academic Research
ISSN: 2348-7666 Vol.2, Issue-1(1), January-March, 2015

प्रेमचंद की कहानियों में मानव मूल्य

Dr. T. GOVINDAMMA
Lecturer in Hindi
Govt. Degree College
Narasannapeta,
Srikakulam Dt.

कलम का सिपाही कहानी और उपन्यास के सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी हिन्दी और उर्दू के महानतम लेखकों में से एक हैं। इनका असली नाम धनपतराय है। इनको नवाबराय के नाम से भी। जाना जाता है। प्रेमचंद पूर्व का साहित्य जादू एवं तिलस्मी से संबधित था। साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद के आगमन के बाद ही एक नई दिशा की और अग्रसर हुआ। साहित्य में समाज एवं मानव संबंधी समस्यओं को स्थान मिला। प्रेमचंद के साहित्य में समस्याओं के साथ-साथ उनके समाधान भी प्रस्तुत किये जाते हैं। साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद के अपूर्व योगदान के कारण बंगाल के विश्वविख्यात उपन्यासकार शरतचंद्र चटोपाध्याय ने उन्हें उपन्सास सम्राट करकर संबोधित किया।

प्रेमचंद की कहानियाँ अद्वितीय एवं अनुपम है। उनके साहित्य में मानव मूल्यों की भरमार है। राष्ट्रियता, यथार्थता, आदर्शोन्मुखता, राजनीतिक मूल्य, सामाजिकता, ग्रामीण नेपथ्य, किसान एवं दलित जीवन के चित्रण के माध्यम से उन्होंने समाज में मानव मूल्यों की स्थापन करने की अपूर्व कोशिश की है। उन्होंने अपने साहित्य में ऐसे मानव मूल्यों की स्थापना की जो तत्कालिन ही नहीं आज के जमाने में भी आदरणीय एवं आचरणीय हैं। प्रेमचंद जी के साहित्य में खासकर समाज की कुरीतियाँ, मानव संबंध, राजनीति उथल-पथल, किसानों और मजदूरों की दयनीय स्थिति का यथार्थवादी चित्रण मिलता हैं। अपनी अद्वितीय, एवं बेजोड रचनाओं के द्वारा लोगों में चेतना लाकर मानव मूल्यों के प्रति जागरुक किया है। मानव-मूल्य जिनका आज तेजी से ह्रास हो रहा हैं । ढूँढो तो भी आज इन मानव-मूल्यों का पता मिलना मुशिकल हो गया है। मानव मूल्यों का ह्रास के कारण ही

आज समाज में जिधर देखो उधर आशांति ही अशांति फैली हुए है। बच्चे माता-पिता के प्रति अपने कर्त्तव्य को भूलते जा रहें हैं। उन्हें मारनें तक से नहीं कतरा रहे हैं। चोरी, चकारी, झूठ, फरेब, भ्रष्टाचार का स्वतंत्र राज्य बना हुया है। एक से एक धिनौनी हरकत आज खुलें आम चल रहै है। आज यहाँ बडें ही नहीं छोटे-छोटे बच्चो भी अत्याचार के शिकार हों रहे है। लोग जैसे मानवीय मूल्यों को ह्रास के लिए भूल ही गये हैं। इतनी पैशाचिकता का एक मात्र कारण मानव मूल्यों का ह्राल ही है। शीलाचार, सदाचार, शिष्टाचार, जैसी मूल्यवान बातें आज दुनिया मे ढूँढना पड रहा है। इन सारी बातों का चित्रण हमें प्रेमचंद के साहित्य में मिलता है। प्रेमचंद जी ने अपनी साहित्य के द्वारा इन मूल्यों का प्रतिपादन कर जनता को एक नयी दिशा निर्देश की है। प्रेमंचद के पात्रों में मानवता और जीवन मूल्यों की झलक दिखाई देती है। उनके पात्र हमें जीवन मूल्य सीखाते हुए जान पडते हैं। उनकी कहानी "मुक्तिधन" एक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहानी है जो साम्प्रदायिक संपूर्णता से ऊपर उठकर मानव व्यवहार की उदारता का चित्रण करती है। इस कहानी में रहमान और दाऊदयाल आदर्श एवं मानवता की प्रतीक है। दाऊदयाल महाजन है सूद वसूलने में जरा भी रियायत नहीँ करता पर रहमान की नेक नियति पर फिदा दोकर उसक आगे सर झुकाता हैं। प्रेमचंद की अधिकांश कहानियों निन्म व मध्यवर्ग का चित्रण है। उन्होने कुल ३०० कहानियाँ लिखी जो एक से बढकर एक जीवन मूल्यों से भरे हुए है। उनकी कहानीयों में किसान, मजदूर, स्त्री, दलित, आदि समस्याएँ चित्रित हुई है। उनके पात्र जैसे हमारें ईर्द-गीर्द घूलते हुए, हमको जीवन मूल्यों का संदेश देते हुए लगते हैं। प्रेमचंद जी अपने पात्रोकें द्वारा मानव मूल्यों की स्थापना पर जोर दे रहे हें। उनकी कहानी "कफन" एक मर्मांतक कहानी है। जिसमे एक बुधिया नामक नारी अपने निकम्मे पति माधव

एवं ससुर घीसु का पालन-पोषण करती है पर उसके प्रति उदासीन होकर दोनो बाप-बेटे उसकी मृत्यु के बाद कफन लाने के बजाय अपना पेट भरते हैं। मानवीय संबंधो के प्रति यह क्रूर विडंबना ही हैं। प्रेमचंद जी इन सब बातो का चित्रण अपने साहित्य मे करके हमे अपने जीवन मूल्यों की ओर ध्यान आकृष्ट करते है। उनका हमसे आग्रह है कि किन्हीं हालातों में भी हम अपनी जीवन मूल्यों से पीछा नहीं हटे। यही मानव-मूल्य हमें सदाचार भरी जिंदगी जीने में मदद करेंगी।

प्रेमचंद जी की "ठाकुर का कुँआ" कहानी दलित जीवन का चित्रण कर अछूतोद्दार की कल्पना की है। मानव जाति का कल्याण तभी संभव होगा जब हम में ऊँच-नीच का भेदभाव मिट जायेगा । इस कहानी में प्यास के कारण गला सूखने वाले पति जोखू की प्यास बुझाने के लिए गंगी ठाकुर के कुएँ से चोरी-छिपे पानी लाने का साहस करती है पर लाख कोशिशों के बाद भी वह पानी नहीं ला पाती है। भारत जैसे सुसंस्कार भरे देश में दलितों के प्रति ऐसा दुर्व्यवहार शोचनीय एवं मानव-मूल्यों के विरूद्ध भी है। प्रेमचंद जी अपने साहित्य के माध्यम से लोगों में मानव-मूल्यों के प्रति सचेत करते है कि मानव-मूल्यों के ह्रास से मानव जाति अवनति के कगार पर जा खडी होगी । उनकी "पूस की रात" भारतीय किसानों की दुर्दशा का सजीव चित्रण मिलता है। किसान देश कि रीढ़ है। अन्नदाता होते हुए भी उसके पास खाने के लिए भरपेट अन्न नहीं है, पहनने के लिए कपडे नहीं है और रहने के लिए पक्का मकान तक नहीं, कुल मिलाकर इन वस्तुओं को बटोरने के लिए पैसे नहीं है वह कर्ज के बोझ तले दबी जिन्दगी जी रहा है। वह सर छुपाने के लिए आसमान की ओर ताकता है । हल्कू ठंड से बचने के लिए कम्बल भी नहीं खरीद पाता है। इसके बदले वह अपनी साल भर की फसल से हाथ धोकर, मजदूरी करना मुनासिब समझता है। किसानों की यह दुर्दशा आज भी उसी तरह

बरकरार है जिसका चित्रण प्रेमचंद जी ने बहुत पहले ही अपने साहित्य में करके अन्नदाताओं को आत्महत्याओं से बचाने का आग्रह किया है ।

प्रेमचंद जी का साहित्य विश्व के प्रमुख भाषाओं में अनूदित हुआ है। उनकी “ईदगाह'' कहानी मानव संबंधो की अहमियत को समझाया है। मानव संबंध आज फीके पडते जा रहे है। मानव संबंधो का निर्वाह आज एक बहुत बडी समस्या बन कर सामने आयी है । माता-पिता के प्रति बच्चे अपने कर्तव्य को भूलते जा रहे है । उनका बलिदान और त्याग आज के जमाने में कोई मायने नहीं रखता है। बुजुर्गो को बोझ समझा जा रहा है। ऐसे में एक छोटा सा बच्चा हामिद अपनी बुआ की सहायता करने तथा उनको खुश करने की इच्छा से बिना खाये अपने लिए खिलौना न खरीद कर अपनी बुआ के लिए चिमटा खरीदता है ताकि रोटी जलाते वक्त बुआ का हाथ न जले। इन पात्रों के चित्रण के द्वारा प्रेमचंद जी मानव-संबंधों के निर्वाह पर जोर देते है । रिश्तों का ख्याल कायम रखना मानव धर्म है। ऐसा न करने से समाज अमानवीयता के पथ पर चलने लगता है। प्रेमचंद जी का साहित्य मानव-मूल्यों का निर्वाह करने का संदेश देता है। संस्कारों का मानव जीवन से गहरा संबंध है। संस्कार हीन मनुष्य मानवता को खो बैठता है। बडों का आदर-सत्कार करना, बडों के प्रति शिष्टता से पेश आना अच्छे संस्कार के लक्षण है । घर के बडे चाहे शिक्षित हो या अशिक्षित हो उनका मन रखना, खयाल करना, उनकी इज्जत करना हमारा परम कर्तव्य है। इसका चित्रण प्रेमचंद जी ने अपनी कहानी “बडे भाई साहब'' में की है। आज की युवा पीढी में संस्कारहीनता नजर आती है। अच्छे संस्कार अनुशासन भरी जिंदगी जीने का श्रोत है।

प्रेमचंद जी का संपूर्ण साहित्य आदर्शवाद एवं मानव-मूल्यों की निधि है। उनके साहित्य से व्यक्ति में खोये हुए अपने उत्तम संस्कार एवं मानव-मूल्य फिर से एकबार जगा सकते है। उनके साहित्य हम में चेतना का संचार कर अच्छे - बुरे का ज्ञान देते है। हमको सोचने पर मजबूर करते है। उनके साहित्य हमें नैतिकता के मार्ग पर ले चलते है। उनके साहित्य समाज को अच्छाई एवं ऊँचाई के पथ पर अग्रसर होने के संदेश देते है। सामाजिक उत्थान के लिये मानव-मूल्यों की बुनियाद अत्यंत आवश्यक है जिसे हम प्रेमचंद जी की साहित्य के द्वारा भरपूर पा सकते हैं।